International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

महादेव गोविंद रानाडे, एक महान व्यक्तित्व

Dr. Rajesh Sakwar

Assistant Professor, HISTORY, Govt. P.G. College, Mandsaur (M.P.)

शोध सार

भारतीय इतिहास में नयी जाग्रति के जनक महादेव गोविंद रानडे जिन्होंने भारत के विकास के क्षेत्र में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक सभी क्षेत्रों में अपने चिंतन से उदारवादी विचारों से सभी के मंगल की कामना की एवं आदान–प्रदान एवं समझौते के मार्ग का समर्थन कर वैधानिक उदारवादी आंदोलन के प्रेरक बने। महादेव रानडे एक विख्यात विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, इतिहासकार, समाज सुधारक एवं शिक्षाविद् थे। जिस समय में रानडे राष्ट्र के द्वारा सम्मानित राजनीतिक नेता और भारतीय अर्थशास्त्र के प्रवर्तक के रूप में उबरे उसी अवधि में वह भारत के समाज सुधारक के रूप में एवं एक महान विचार के रूप में आमजन के सामने आये। बंबई शहर पाश्चात्य शिक्षा का एक केंद्र बन चुका था। उसमें पाश्चात्य ढंग का जीवन यापन प्रारंभ हो गया था। उसके कारण नये विचार महाराष्ट्र के अन्य भागों में प्रसारित होने लगे थे। महादेव गोविंद रानडे समाज सुधार के महानतम समर्थक थे एवं विधवाओं के पुनर्विवाह के पक्षधर थे। सामाजिक दृष्टि से स्त्रियों की हेय दशा के लिए रानडे ने बाह्य आक्रमणकारियों को उत्तरदायी बताया। विधवाओं के पुनर्विवाह के क्षेत्र में रानडे हमेशा सक्रिय रहे और उनका मानना था कि राजनीतिक मुक्ति के लिए भी सामाजिक प्रगति आवश्यक है। रानडे, राजा राममोहन राय की भाँति सामाजिक सुधारों की दृष्टि से इस कारण उचित मानते थे कि इसके द्वारा निष्क्रिय सुधारात्मक अधिक सक्रिय हो उठता है। महादेव गोविंद रानडे के विचारों में संविधानवादी, राजनीति, विवेकवादी मूल्यों की स्थापना, व्यक्ति के अधिकारों का समर्थन सामाजिक आदर्शवाद, नैतिक राजनीतिक पर बल आर्थिक शोषण के विरुद्ध मुखर वैचारिक संघर्ष के रूप में उनकी भूमिका महानतम थी। अपने छोटे से आपेक्ष रहित जीवन में इस महान पुरुष ने नैतिक विधिसम्मत, विवेकवादी सुधारवादी धर्म निरपेक्ष एवं आर्थिक यथार्थता पर आधारित राष्ट्रवाद की मध्यमार्गी राजनीति का सूत्रपात किया।

बीज शब्द विधिसम्मत, विभूतियाँ , शुद्धिकरण, इहलौकिक, निर्भिकतापूर्वक, सत्यनिष्ठा ।

शोध सारांश

भारतीय इतिहास में अग्रणी एवं भारतीय नवजागरण के पुरोधा प्रमुख युग पुरुष राजा राममोहन राय के बाद परवर्ती काल में उदारवादी स्तम्भ नयी जाग्रति के जनक महादेव गोविंद रानडे (18 जनवरी 1842– 16 जनवरी 1901) भारतीय इतिहास के एक देदीव्यमान नक्षत्र थे। जिन्होंने भारत के विकास के क्षेत्र में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक सभी क्षेत्रों में अपने चिंतन से उदारवादी विचारों से सभी के मंगल की कामना की एवं आदान–प्रदान एवं समझौते के मार्ग का समर्थन कर वैधानिक उदारवादी आंदोलन के प्रेरक बने। महादेव गोविंद रानडे ने सुप्त महाराष्ट्र प्रांत को जगाकर नवजागरण की प्रेरणा देकर नवीन विचार प्रस्फुटित करने वहाँ के जनमानस को जाग्रत किया। महादेव रानडे एक विख्यात विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, इतिहासकार, समाज सुधारक एवं शिक्षाविद् थे। आधुनिक महाराष्ट्र में जो विभूतियाँ हैं, उनमें उनका स्थान सर्वोच्च है। महादेव गोविंद रानडे का अपने समकालीन दादा भाई नौरोजी, गोपालहरि देशमुख, फिरोजशाह मेहता, काशीनाथ त्रयम्बक तेलग्र, आगरकर एवं तिलक से आदि से अच्छा सम्पर्क रहा। महर्षि दयानंद सरस्वती से उनका गहरा संपर्क रहा। महादेव गोविंद रानडे का संत सदृश व्यक्तित्व उनके भारतव्यापी सम्मान एवं श्रद्धा का कारक था। तुकाराम, तुलीसदास, संत आगस्ताईन तथा ग्रीगरी प्रथम के समान रानडे भी ईश्वर के व्यापक अस्तित्व एवं असीम अनुकम्पा में आस्था रखते थे। इसलिए वे इतिहास की आध्यात्मिक

व्याख्या में विश्वास करते थे। एक बार गोपालकृष्ण गोखले ने कहा था यदि रानडे कुछ शताब्दियों पहले जन्म होते तो उनका स्थान एकनाथ या तुकाराम के समान होता। जिस समय में रानडे राष्ट्र के द्वारा सम्मानित राजनीतिक नेता और भारतीय अर्थशास्त्र के प्रवर्तक के रूप में उबरे उसी अवधि में वह भारत, के समाज सुधारक के रूप में एवं एक महान विचार के रूप में आमजन के सामने आये।,

प्रार्थना समाज एवं महादेव गोविंद रानडे बंगाल के बाहर भारत के अन्य प्रांतों मे ब्राहा समाज के विचारों को पनपने के लिए इतना उपयुक्त वातावरण निर्मित नहीं हो सका। जितना कि महाराष्ट्र में हुआ। 19वीं सदी के आरंभ में अनेक बातों में महाराष्ट्र एवं बंगाल की स्थिति समान हो चली थी। भारत के अन्य भागों की अपेक्षा इन दोनों प्रदेशों में पाश्चात्य प्रभावों को अधिक गहराई से आत्मसात किया था। बंगाल के कलकत्ता के समान महाराष्ट्र का बंबई शहर था। जो पाश्चात्य शिक्षा का एक केंद्र बन चुका था। उसमें पाश्चात्य ढंग का जीवन यापन प्रारंभ हो गया था। उसके कारण नये विचार महाराष्ट्र के अन्य भागों में प्रसारित होने लगे थे। इहलौकिक ज्ञान एवं वैज्ञानिक पाडित्य भारत के अन्य स्थानों की अपेक्षा कलकत्ता एवं बंबई में आधुनिक काल में सबसे पहले विकसित हुए। सन 1964 में ब्राहा समाज के प्रतिष्ठित नेता केशवचंद्र सेन से बंबई की अपनी प्रथम यात्रा की उनके संदेश को यहाँ जनसमुदाय पर गहरा प्रभाव पड़ा। तीन वर्ष तक बंबई में केशवचंद्र सेन के विचार हलचल पैदा करते रहे। मार्च 1867 में डॉ. आत्माराम पांडरंग के नेतृत्व में बंबई में प्रार्थना समाज की स्थापना की गयी। प्रार्थना समाज के उद्देश्य केशवचंद्र सेन के ब्राहा समाज से मिलते–जुलते थे। एक सर्वशक्तिमान एवं सर्वोपरि परमात्मा में विश्वास, ऐसे परमात्मा की उपासना द्वारा मुक्ति की प्राप्ति, अवतारवाद में अविश्वास, महंत पुजारियों आदि की सत्ता और मूर्ति पूजा का विरोधी ब्राहा समाज की भांति प्रार्थना समाज ने उपनिषदों के प्रति आदर व्यक्त किया, परंतु साथ ही भक्ति के माध्यम से भक्त के आराध्य देव के प्रति अपनी निष्ठा रखने पर जोर दिया। प्रार्थना समाज के अनुयायियों ने परमात्मा की उपासना और इहलौलिक सदाचार के पारस्परिक संबंधों पर बल दिया। सन् 1868 में केशवचंद्र सेन ने बंबई की दूसरी यात्रा की और वहाँ उन्होंने प्रार्थना समाज को दृढ़ बनाया संगठन को मजबूत बनाया। इसके दो वर्ष बाद रामकृष्ण गोपाल भंडारकर और महादेव गोविंद रानडे प्रार्थना समाज के सदस्य बने और इन दोनों महापुरुषों ने उसमें एक नवीन शक्ति प्रदान की। 1872 में केशवचंद्र सेन ने घनिष्ठ मित्र एवं ब्राहा समाज के प्रचारक प्रतापचंद्र मजुमदार कलकत्ता से बंबई गये और वहां लगभग छह माह तक रहकर उन्होंने प्रार्थना समाज को पर्याप्ततः सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया। 1874 में उन्होंने बंबई के गिरगांव में प्रार्थना समाज के निजी भवन का निर्माण कराया।

रानडे की मृत्यु 1901 में हुई और 1910 मे प्रार्थना समाज इस स्थिति में पहुँच गया कि इंग्लैंड के दी टाइम्स नामक समाचार पत्र के भारत भेज संवाददाता श्वेलेंटाइन शिरोलश ने उस वर्ष में प्रकासित अपने ग्रंथ इंडियन अरनेस्टश में प्रार्थना समाज को मृत्यु शील आंदोलन की संज्ञा दी। किन्तु कुछ भी हो भारत के पुनः जागरण मे ब्राह्म समाज एवं प्रार्थना समाज ने समाज सुधार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रार्थना समाज ने देश में समाज सुधार के कार्यों में चेतना पैदा की एवं ब्राह्म समाज ने देश को समाज सुधार की नवीन जाग्रति एवं चेतना पैदा की। जिसका आगामी समाज सुधार आंदोलनों पर प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

महादेव गोविंद रानडे के विविध क्षेत्रों में योगदान –

महादेव गोविंद रानडे समाजसुधार के महानतम समर्थक थे एवं वे विधवाओं के पुनर्विवाह के पक्षधर थे। सामाजिक दृ ष्टि से स्त्रियों की हेय दशा के लिए रानडे ने बाह्य आक्रमणकारियों को उत्तरदायी बताया। विधवाओं के पुनर्विवाह के क्षेत्र में रानडे हमेशा सक्रिय रहे और 1866 में जो विधवा विवाह संघ स्थापित किया गया था, उसके सदस्य थे उनका मानना था कि राजनीतिक मुक्ति के लिए भी सामाजिक प्रगति आवश्यक है। हेगेल, काम्ट तथा स्पेंगलर की भांति रानडे भी समाज को एक जटोल अवयव मानते थे। उनका मानना था कि राजनीतिक एवं समाज सुधार को एक–दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता और रानडे का यह मानना था कि राष्ट्र को उसकी कुछ कुप्रथाओं से मुक्त करने के लिए समाज सुधार आवश्यक है एवं समाज सुधार राष्ट्रीय चरित्र की दृढता एवं शुद्धिकरण का एक साधन था, इसिलए उन्होंने सामाजिक विकास के परिवर्तन की महत्व दिया। इतिहास के विद्यार्थी होने के नाते रानडे

में यह देख लेने की अतदृष्टि था कि अपेक्षित सामाजिक परिवर्तन, गर्म परिवर्तन अथा क्रांति के द्वारा नहीं लाया जा सकता, उसके लिए अनिवार्य है कि नये विचारों तथा आदर्शनी को धीरे–धीरे ग्रहण किया जाये और सावधानी से उन्हें आत्मसात किया जाये। यदि सुधार के कार्य को ऐसे कार्यक्रम पर छोड़ दिया जाये, जिसमें प्रगति सूचक तत्वों की कमी और नये चरण बढ़ाने में अक्षमता हो तो सुधार नहीं लाये जा सकते।

रानडे तथा उनके साथियों की देशभक्ति क्रांतिकारी थी. क्योंकि वे पुरानी धार्मिक विकृतियों एवं सामाजिक परिपाटियों के हानिकारक प्रभाव को समझते थे और उनके विरुद्ध उन्होंने निर्भिकतापूर्वक युद्ध की घोषणा की थी। रानडे ने सामाजिक सम्मेलन आंदोलन को नींव डाली और उन्होंने कांग्रेस के अधिवेशनों के साथ सामाजिक सम्मेलन करने की योजना प्रारंभ की थी। प्रथम सामाजिक सम्मेलन 1887 में मद्रास में हुआ था। एन.एन. राय–रानडे को सत्यनिष्ठा की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं कि उनको ये भावनाएं एवं मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी के पवित्र उद्‌गार थी, फिर भी राय स्वीकार करते हैं कि रानडे उदीयमान नैतिक तथा सामाजिक शक्तियों के प्रतिनिधि थे। अधिकारी विशेष रूप से न्यायमूर्ति के रूप में रानडे के द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त की गयी एवं प्रशासक के रूप में उन्होंने अपने क्रियाकलापों से समाज को नवीन दिशा दी। सार्वजनिक सभा में भी महादेव गोविंद रानडे ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया एवं रानडे पुणे की अनेक शिक्षण संस्थाओं के प्रवर्तक थे। कांग्रेस संगठन को मजबूत बनाने के लिए महादेव गोविंद रानडे ने अपना प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान दिया। तत्कालीन तथ्यों एवं घटनाओं से स्पष्ट है कि इंडियन नेशनल कांग्रेस के संस्थापकों में रानाडे का अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष योगदान रहा है. आर्थिक समस्याओं पर उनके भाषण एवं लेखों मे उनके सुझाव महत्वपूर्ण होते थे। रानडे के विचार समाजवादी थे। वह राष्ट्रीय राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं के आपसी संबंधों को भली भाँति मानते थे। साथ ही महादेव रानडे की इतिहास में गहरी रुचि थी और इससे भी अधिक रुचि अध्ययन की ऐतिहासिक प्रणाली में थी। वह कहते थे कि ऐतिहासिक प्रणाली वह प्रणाली है, जो अतीत के वर्णन के साथ भविष्य का पूर्वानुमान भी प्रस्तुत करती है। मराठों के इतिहास के विषय में रानडे ने जो निष्कर्ष निकाले, उनमें शोध से कुछ संशोधन की आवश्यकता हुई, लेकिन यूरोपीय इतिहासकारों के विचारों का उन्होंने खंडन किया, वह एकदम सटिक एवं निर्विवाद था। बुद्दि और सत्य दृष्टि के द्वारा तत्कालीन ऐतिहासिक साहित्य के धुंधलके में से झांककर उन्होंने देख लिया था कि मराठों का महान इतिहास एवं प्रबल जाति के उत्कृष्ट, देश भक्तिपूर्ण प्रयत्न का इतिहास है। सभी विचारशील लेखकों ने रानडे के इतिहास लेखन की प्रशंसा की है। साथ ही रानडे एक महान धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति भी थे। प्रार्थना समाज एक धार्मिक संस्था थी, जिसके रानडे प्रमुख सदस्य थे। उसकी हर सप्ताह प्रार्थना सभाएँ हुआ करती थी। प्रार्थना के बाद उसका कोई सदस्य धार्मिक प्रवचन करता या उपदेश देता था। प्रार्थना की भांति ही इन उपदेशों का उद्देश्य भी लोगों के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम और परमानंद की भारना जाग्रत करना था। प्रवचनों और उपदेशों से शंकाओं का समाधान होता था। डर और आशंकाएँ दूर हो जाती थी। संतोष शांति एवं साहस का संचार होता था । उपदेश देने के लिए अकसर रानडे को बुलाया जाता था। रानडे के धार्मिक प्रवचनों का एक संग्रह श्रीमती रानडे ने प्रकाशित कराया था। उसमें उनके व्यक्तिगत धर्म की सूक्ष्म झाँकी देखने को मिलती है अतः रानडे के विचारों से समकालीन महापुरुष प्रभावित थे। वे क्रांति विप्लव के विचारों से दूर थे। उनके विचारों में संविधानवादी, राजनीति, विवेकवादी मूल्यों की स्थापना, व्यक्ति के अधिकारों का समर्थन सामाजिक आदर्शवाद, नैतिक राजनीतिक पर बल आर्थिक शोषण के विरुद्ध मुखर वैचारिक संघर्ष के रूप में उनकी भूमिका महानतम थी। अपने छोटे से जीवन में इस महान पुरुष ने नैतिक विधिसम्मत, विवेकवादी सुधारवादी धर्म निरपेक्ष एवं आर्थिक यथार्थता पर आधारित राष्ट्रवाद की मध्यमार्गी राजनीति का सूत्रपात किया। महादेव गोविंद रानडे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व एक ऐसे ही महान व्यक्तित्र को प्रकाश में लाता है। जो प्रकाशवान प्रेरणास्पद एवं उदात्त था।

संदर्भ ग्रंथ–

1ण डॉ. भीमराव अम्बडेकर, रानडे, गांधी एड जिन्ना, बाम्बे 1943
2ण अप्पादोराय, ए. डाक्यूमेंट्स आन पालिटिकल थाट इ मार्डन इंडिया बाम्बे1973

3ण पवत टी.व्ही., महादेव गोविंद रानडे–ए बायोग्राफी 1963 वाम्बे
4ण फाटक, एन. आर. रानडे की जीवनी, मराठी 1924
5ण चार्ल्स, एच.ही. मसेथ, इंडियन नेशनलिज्म एंड हिन्दू सोशल सिफार्म 1964
6ण शिरोल, सर वेलेंटाइन, इंडियन अरनेस्ट, 1910, लंदन
7ण गद्रे, डॉ. प्रभाकर मराठो के इतिहासकार एवं उनका कृतित्व 1988
8ण डॉ. गुप्ते, मनीषा, गोपालकृष्ण गोखले व्यक्तित्व एवं कृतित्व 2002